

श्री महावीर पूजन

(डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत)

(स्थापना)

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं ।
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं ॥
जो तरण-तारण भव-निवारण, भव-जलधि के तीर हैं ।
वे वन्दनीय जिनेश, तीर्थंकर स्वयं महावीर हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

जिनके गुणों का स्तवन पावन करन अम्लान है ।
मल-हरन निर्मल-करन भागीरथी नीर-समान है ॥
संतप्त-मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में ।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

लिपटे रहें विषधर तदपि-चन्दन विटप निर्विष रहें ।

त्यों शान्त शीतल ही रहो रिपु विघन कितने ही करें ॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुख-ज्ञान-दर्शन-वीर जिन अक्षत समान अखण्ड हैं ।

हैं शान्त यद्यपि तदपि जो दिनकर समान प्रचण्ड हैं ॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रिभुवनजयी अविजित कुसुमसर सुभट मारन सूर हैं ।

पर-गन्ध से विरहित तदपि निज-गन्ध से भरपूर हैं ॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यदि भूख हो तो विविध व्यंजन मिष्ट इष्ट प्रतीत हों ।

तुम क्षुधा-बाधा रहित जिन! क्यों तुम्हें उनसे प्रीत हो? ॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

युगपद् विशद् सकलार्थ झलकें नित्य केवलज्ञान में।
त्रैलोक्य-दीपक वीर-जिन दीपक चढ़ाऊँ क्या तुम्हें॥
संतप्त-मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
जो कर्म ईधन दहन पावक पुंज पवन समान हैं।
जो हैं अमेय प्रमेय पूरण ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान हैं॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
सारा जगत फल भोगता नित पुण्य एवं पाप का।
सब त्याग समरस निरत जिनवर सफल जीवन आपका॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अनर्घ्य पद के सामने।
उस परम-पद को पा लिया हे पतितपावन! आपने॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

सित छठवीं आषाढ़, माँ त्रिशला के गर्भ में।

अन्तिम गर्भावास, यही जान प्रणमूँ प्रभो॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस दिन सित चैत, अन्तिम जन्म लियो प्रभू।

नृप सिद्धार्थ निकेत, इन्द्र आय उत्सव कियो॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी मगसिर कृष्ण, वर्द्धमान दीक्षा धरी।

कर्म कालिमा नष्ट, करने आत्मरथी बने॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सित दशमी बैसाख, पायो केवलज्ञान जिन।

अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य, प्रभुपद पूजा करें हम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक मावस श्याम, पायो प्रभु निर्वाण तुम।

पावा तीरथधाम, दीपावली मनाय हम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

यद्यपि युद्ध नहीं कियो, नाहिं रखे असि-तीर।

परम अहिंसक आचरण, तदपि बने महावीर॥

(पद्वरि)

हे मोह-महादलदलन वीर, दुद्धर-तप संयम धरण धीर।

तुम हो अनन्त आनन्दकन्द, तुम रहित सर्व जग दंद-फंद॥

अघकरन करन-मन-हरन-हार, सुखकरन हरन भवदुख अपार।

सिद्धार्थ तनय तनरहित देव, सुर-नर-किन्नर सब करत सेव॥

मतिज्ञान रहित सन्मति जिनेश, तुम राग-द्वेष जीते अशेष।

शुभ-अशुभ राग की आग त्याग, हो गये स्वयं तुम वीतराग॥

षट् द्रव्य और उनके विशेष, तुम जानत हो प्रभुवर अशेष।

सर्वज्ञ-वीतरागी जिनेश, जो तुम को पहचाने विशेष॥

वे पहचानें अपना स्वभाव, वे करें मोह-रिपु का अभाव।

वे प्रकट करें निज-पर विवेक, वे ध्यावें निज शुद्धात्म एक॥

निज आतम में ही रहें लीन, चारित्र-मोह को करें क्षीण।

उनका हो जाये क्षीण राग, वे भी हो जायें वीतराग॥

जो हुए आज तक अरीहंत, सबने अपनाया यही पंथ।

उपदेश दिया इस ही प्रकार, हो सबको मेरा नमस्कार॥

जो तुमको नहीं जाने जिनेश, वे पायें भव-भव-भ्रमण क्लेश ।
 वे माँगें तुमसे धन-समाज, वैभव पुत्रादिक राज-काज ॥
 जिनको तुम त्यागे तुच्छ जान, वे उन्हें मानते हैं महान ।
 उनमें ही निशदिन रहें लीन, वे पुण्य-पाप में ही प्रवीन ॥
 प्रभु पुण्य-पाप से पार आप, बिन पहिचाने पायें संताप ।
 संतापहरण सुखकरण सार, शुद्धात्मस्वरूपी समयसार ॥
 तुम समयसार हम समयसार, सम्पूर्ण आत्मा समयसार ।
 जो पहचानें अपना स्वरूप, वे हो जायें परमात्मरूप ॥
 उनको ना कोई रहे चाह, वे अपना लेवें मोक्ष राह ।
 वे करें आत्मा को प्रसिद्ध, वे अल्पकाल में होय सिद्ध ॥
 ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान ।
 वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान ॥
 (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

जिन-प्रतिमा जिनवर-सी कहिए ।

भविक तुम वन्दहु मनधर भाव, जिन-प्रतिमा जिनवर-सी कहिए ।
 जाके दरस परम पद प्रापति, अरु अनंत शिव-सुख लहिए ॥जिन. ॥
 निज-स्वभाव निरमल है निरखत, करम सकल अरि घट दहिये ।
 सिद्ध-समान प्रकट इह थानक, निरख-निरख छवि उर गहिए ॥जिन. ॥
 अष्ट कर्म-दल भंज प्रकट भई, चिन्मूरति मनु बन रहिये ।
 जाके दरस परम पद प्रापति, अरु अनंत शिव-सुख लहिए ॥जिन. ॥
 त्रिभुवन माहिं अकृत्रिम-कृत्रिम, वंदन नित-प्रति निरवहिये ।
 महा-पुण्य संयोग मिलत है, 'भैया' जिन प्रतिमा सरदहिये ॥जिन. ॥